कार्ल मार्क्स

मार्क्स का जीवन और काल— मार्क्स का जन्म राइनलैंड के ट्रायर नामक स्थान पर एक यहूदी परिवार में हुआ था। बचपन में ही उसने ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया। उसने बॉन, बर्लिन और जेना में इतिहास, कानून और दर्शन का अध्ययन किया। उसने जेना विश्वविद्यालय से दर्शन में डॉक्टरेट (पी. एच. डी.) की उपाधि प्राप्त की। अपने विद्यार्थी जीवन में वह समाजवाद की ओर आकृष्ट हुआ। यह (समाजवाद) ऐसा सिद्धांत था जिसे तत्कालीन शासकों द्वारा बहुत खतरनाक समझा जाता था। मार्क्स की समाजवादी विचारधारा और उग्र राज्य विरोधी विचारों के कारण उसे निष्कासित कर दिया गया। और तब उसे फ्रांस तथा बेल्जियम में शरण लेनी पड़ी। जब वह फ्रांस में था तब ही उसने जर्मनी में कार्यरत मजदूरों को संगठित करने का काम जारी रखा। इसके परिणामस्वरूप फ्रांसीसी सरकार ने प्रशिया के सरकार के दबाव के कारण उसे फ्रांस से निष्कासित कर दिया। सन् 1849 में वह

इंग्लैंड में जाकर बस गया और 1883 में तक मृत्यु - पर्यंत वहीं रहा।

बौद्धिक यात्रा का आरंभ -

मार्क्स ने दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति और समाज से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से लिखा है। उसने बहुत व्यापक स्तर पर विभिन्न विषयों पर लिखा है। इस कारण उसने इतने व्यापक और संश्लिष्ट विचारों पर इस पाठ के सीमित पृष्ठों में चर्चा करना संभव नहीं है। इसलिए उसे किसी मत या संप्रदाय में रखना उतना ही कठिन है। अपने विद्यार्थी जीवन के दौरान मार्क्स हीगल के आदर्शवाद की ओर आकृष्ट हुआ। लेकिन शीघ्र ही उसकी रुचि मानववाद और अंततः वैज्ञानिक समाजवाद की ओर हो गई। वह अपने समय के प्रमुख ~~आंदोलनों~~ आंदोलनों और घटनाओं से प्रभावित हुआ। उसने जीवन के रचनात्मक सभी में वहां किसी न किसी रूप में विकासवाद विकासवाद का विचार ~~प्रधान~~ पर्याप्त प्रचलन में था। इनमें में विकास के एक रूप का प्रवर्तन हेगल ने किया तो दूसरे रूप का प्रतिपादन डार्विन ने किया। मार्क्स ने कुछ समकालिन विषयों को स्वीकार किया जबकि कुछ अन्य विषयों को उसने अस्वीकार कर दिया।